HISTORY CLASS XII
(SOLUTION & MARKING SCHEME)
SECTION –A

M.C.Q.

Q.1.	(C)	:	कालीबंगन	1
Q.2	(B)	:	समकोण	1
Q.3	(B)	:	कुषाण	1
Q.4	(A)	:	1028	1
Q.5	(B)	:	ब्रहमचर्य	1
Q.6	(D)	:	तेरहवाँ	1
Q.7	(A)	:	वैनिस	1
Q.8	(B)	:	कीर्तन घाष	1
Q.9	(C)	:	विष्णु	1
Q.10	(C)	:	पम्पा देवी	1
Q.11	(C)	:	58%	1
Q.12	(B)	:	संथाल विद्रोह	1
Q.13	(B)	:	मेरठ छावनी	1
Q.14	(B)	:	क्रिप्स प्रस्ताव	1
Q.15	(B)	:	गुजरात	1
Q.16	(B)	:	1947	1

1 x 16 = 16

SECTION –B

Q. 17. Ans :- मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ है मृतकों का टीला । पुरात्वविदों का यह अनुमान है कि मोहनजोदड़ों नगर सात बार बसा एंव उजड़ा। 1 + 1 = 2

Q. 18. Ans :- उस युनानी राजदूत का नाम मेगस्थनीज था जो चन्द्रगुप्त मौर्य दाबार मे आया था। उसने इंडिका नामक पुस्तक लिखी ।

1 + 1 = 2

Q. 19. Ans :- संयुक्त परिवार प्रणाली से अभिप्राय उन परीवारों से है जहाँ तीन चार पीढ़ियों के लोग इकट्ठे रहते है। 1 + 1 = 2

Q. 20. Ans :- 1) दोनों धर्म अहिंसा में विश्वास रखते है।
2) दोनों धर्म कर्म सिद्धांत में विश्वास रखते है। 1 + 1 = 2

Q. 21. Ans :- इब्नबतूता मोरक्को से भारत आया था, उसने "रिहला" नामक पुस्तक लिखी थी ।

1 + 1 = 2

Q. 22. Ans :- तालीकोटा की लड़ाई 23, जनवरी 1565 ई0 को विजयनगर एवं दक्षिण भारत के चार राज्यों (अहमद नगर, बीदर, गोलकुंडा एवं बीजापुर) के मध्य हुई ।

1 + 1 = 2

Q. 23. Ans :- 1) अबुल फजल ने आइन–ए–अकबरी पांडुलिपि को पाँच बार संशोधित किया था । 1

2) अबुल फजल ने मौखिक प्रमाणों को तथ्यों के रूप में पुस्तक में शामिल करने से पूर्व अन्य स्त्रोंतो से उसकी वास्तविक जांच की थी 1

Q. 24. Ans :- महात्मा गांधी ने अपनी डांडी यात्रा 12 मार्च, 1930 ई0 को गुजरात के साबरमती आश्रम से शुरू की थी। 2

Q. 25. Ans :- 1) केन्द्रीय सूची में सभी महत्वपूर्ण विषय रखे गए है । 1

2) अनुच्छेद 356 में गवर्नर की सिफारिश पर केन्द्र सरकार को राज्य सरकार के सभी अधिकारों को अपने हाथ में लेने का अधिकार है । 1

SECTION –C

Q. 26. Ans :- 1) विशाल स्नानागार 180 फुट लंबा और 108 फुट चौड़ा था इसके मध्य 39 फुट लंबा, 23फुट चौड़ा तथा 8 फुट गहरा तालाब बना हुआ था । 1

2) तालाब के निकट कुआँ था जिससे दस तालाब में पानी भर लिया जाता था । तालाब से चढ़ने उतरने के लिए सिढ़ियां बनी हुई थी । 1

3) स्नानागार के आस–पास कई कमरे बने हुए थे, समझा जाता था कि लोग यहाँ धार्मिक आयोजनों पर स्नान करने आते थे। 1

Q. 27. Ans :- अशोक के अभिलेख मौर्य काल के इतिहास को जानने के लिए हमारे पास सबसे बहुमूल्य स्त्रोत है, इन अभिलेखों को अशोक ने अपने साम्राज्य के महत्वपूर्ण स्थानों तथा राजमार्गों और चट्टानों, स्तम्भों और गुफाओं पर अंकित करवाया था। 1

यह अभिलेख भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण अंश है , जो हमें उनके धार्मिक और सामाजिक यात्रा के बारे में जानकारी प्रदान करते है । 1

इन अभिलेखों का मूल्य आज भी बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि वे हमें सहिष्णुता, शांति और सामाजिक न्याय के मूल्यों का पालन करनेकी प्रेरणा प्रदान करते है। 1

Q. 28. Ans :- छठी शताब्दी ई0पू0 में जैन तथा बौद्ध धर्मों का उदय हआ । छठी शताब्दी ईस्वी पूर्व स्वर्णिम काल कहलाता है । क्योंकि इस समय विभिन्न क्षेत्रों में विजयी साम्राज्य बने, विज्ञान, तहनीक और कला में उन्नति हुई धर्म, संस्कृति और विदेशी व्यापार का विस्तार हुआ।

1) उस समय हिन्दु धर्म बहुत जटिल एवं खर्चीला हो गया था। 1

2) छठी शताब्दी ई0पू0 में बहुत से महापुरूषों का जन्म हुआ । 1

3) भारतीय समाज में जाति–प्रथा ने कठोर रूप धारण कर लिया था। 1

Q. 29. Ans :- 1857 ई0 की क्रांति के पूर्व वर्षों में भारतीय सिपाहियों और अनेक वरिष्ठ अंग्रज अधिकारियों के सम्बन्ध मे लगातार बदलाव आता जा रहां था। । वरिष्ठ अधिकारियों का का रवैया अपने भारतीय सिपाहियों के साथा कड़ा होता जा रहा था। 1

भारतीय धर्म और संस्कृति का मजाक उनके सामने उड़ाया जा रहा था। भारत की ब्रिटिश सरकार ने भारतीययों को उच्च पदों से वंचित रखने की निति को अपनाया, अंग्रेजी सैनिकों की अपेक्षा भारतीय सिपाहियों को बहुत कम वेतन एवं भत्ते दिए जा रहे थे । 1

1856 ई0 में लार्ड कैनिंग ने सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम लागू करके धावों पर नमक छिड़कने का कार्य किया । अंग्रेज अधिकारियों की इस निति ने क्रांति को जन्म दिए । 1

Q. 30. Ans :- 1935 के भारत सरकार अधिनियम की एक प्रमुख विशेषता यह भी थी कि इसने प्रांतों मे स्वःशासन को लागू किया । इसने 1919 ई0 के अनुसार प्रांतो में स्थापित की गई द्वैध–शासक प्रणाली को समाप्त कर दिया। 1

प्रांतों के सभी विषयों को अव मंत्रियों के अधीन कर दिया गया मंत्रीमंडल को अपने कार्यों के लिए विधान मंडल के प्रति उत्तरदायी ठहराया गया 1

इस प्रकार प्रांतों में पूर्ण रूप से उत्तरदायी शासन स्थापित करने की व्यवस्था की गई । यह प्रांतीय स्वःशासन लागू करने की ओर एक बड़ा कदम था। 1

Q. 31. Ans :- भारतीय संविधान के महत्व के तीन बिंदु निम्नलिखित है :–

1) विधि का शासनः– संविधान विधि के शासन पर आधारित प्रशासन के लिए रूपरेखा / स्थापित करता है, यह सुनिश्चित करता है कि कोई व्यक्ति सरकारी अधिकारियों सहित विधि से ऊपर नहीं है । 1

2) अधिकारों की सुरक्षा :– यह नागरिकों को मौलिक अधिकारों की गारंटी देना है जैसे वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्म की स्वतंत्रता आदि की रक्षा । करता है । साथ की इन अधिकारों का उल्लंधन होने पर कानूनी निवारण के लिए तंत्र भी प्रदान करता है । 1

3) लोकतंत्रिक सिद्धांत :– सार्वभौम वयस्क मताधिकार जैसे प्रावधानों के माध्यम से संविधान निःशुल्क और निष्पक्ष चुनावों के माध्यम से शासन में नागरिकों की भागीदारी सुनिश्चित करता है । 1

SECTION –D

Q. 32. Ans :- विजय नगर की जल आवश्यकताओं का मुख्य रूप में तुंगभद्रा नदी से निकलने वाली धाराओं पर बांध बनाकर पूरा किया जाता था । बांधों से विभिन्न प्रकार के हौजों का निमाण किया जाता था । हौज के पानी से न केवल आस–पास के खेतों को सींचा जा सकता था बल्कि इसे एक नहर के माध्यम से राजधानी तक ले जाया जाता था। 2

कमलपुरम, जलाशय नामक हौज सबसे महत्वपूर्ण हौज था । तत्कालीन समय के सर्वाधिक महत्वपूर्ण जल संबन्धी संरचनाओं में से एक हिरियां नहर के भग्नावशेषों को आज भी देखा जा सकता है । इस नहर में तुग भद्रा पर बने बाँध से पानी लाया जाता था और इस धार्मिक केन्द्र से शहरी केन्द्र को अलग करने वाली घाटी को सिंचित करने में प्रयोग किया जाता था । इसके अलावा सामान्य नगरवसियों के लिए पानी की आवश्यकताओं को पूरा करता था। 2

Q. 33. Ans :- 7वीं ओं 9वीं शताब्दी के दौरान नयनार और अलवार दोनों ने दक्षिण भारत में धार्मिक आंदोलनों का नेतृत्व किया । अलवार संतों ने वैष्णव मत को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया, अलवार विष्णु के भक्त थे, अलवार संतों में 12 संत बहुत प्रसिद्ध थे इनमें अंडाल एक स्त्री थी, उसके भक्ति गीत आज भी लाकप्रिय है ।अलवार संतों ने अपनी शिक्षाओं का प्रचार लोगों की जनभाषा तमिल में किया। उनकी शिक्षाए बहुत सरल थी । अलवार स्त्री–पुरूषों के समान अधिकारों के पक्ष में थे । उन्होंने लोगो को सादा एवं पवित्र जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। वे जाती प्रथा के कट्टर विरोधी थे। नयनार संतों का भी दक्षिण भारत के लोगों पर जादुई प्रभाव पड़ा । उन्होने उपनी शिक्षाओं का प्रचार लोगों की जन भाषा तमिल में किया । व शिव को सर्वोच्च मानते थे । उनका कथन था कि केवल शिव की उपासना से की मनुष्य इस भव सागर से पार हो सकता है । वे स्त्रियों को पुरूषों के बराबर अधिकार देने के पक्ष में थे । उनका कथन था कि जाति प्रथा भारतीय समाज के माथे परएक कलंक के समान है ।इस प्रकार मध्यकाल में अलवार और नयनार संतों ने भक्ति आंदोलन में अपनी शिक्षाओं के प्रचार के माध्यम से और मजबूत किया । 2 x 2=4

Q. 34. Ans :- 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन भारत के स्वतंत्रता संघर्ष मे महत्वपूर्ण स्थान रखता है । यह अंतिम और निस्संदेह भारत में ब्रिटिश के विरूद्ध स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए आरम्भ किया गया । सबसे जोरदार आंदोलन यह आंदोलन महात्मा गांधी जी द्वारा 8 अगस्त 1942 ई0 को शुरू किया गया । इसके शुरू होने के निम्नलिखित कारण थेः– 1

1) दूसरे विश्व युद्ध में इंगलेड एवं जापान एक –दूसरे के शत्रु थे । जापान ने 1941–42 ई0 में एशिया के बहुत से क्षेत्रों जैसे फिलिपीन, सिंगापुर, मलाया तथा वर्मा आदि पर कब्जा कर लिया था । वे बढ़ी तेजी से भारत की ओर बढ़ रहा था ।एसी स्थिति में गांधी जी ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने का सुझाव दिया । 1

2) ब्रिटिश सरकार ने युद्ध के दौरान भारतीयों से सहयोग प्राप्त करने के लिए क्रिस्प मिशन की नियुक्ति की । यह मिशन 22 मार्च, 1942 ई0 का भारत पहुँचा। उसके झूठे आश्वासन भारतीयों को प्रभावित न कर सके । इसलिए उन्होने आंदोलन का रास्ता अपनाया। 1

3) क्रिप्स मिशन की असफलता के कारण महात्मा गाँधी अग्रेंजों से बहुत निराश हुए । 14 जुलाई, 1942 ई0 को वर्धा (गुजरात) में कांग्रेस कार्यकारिणी ने "भारत छोड़ो" प्रस्ताव पास किया । 1

SECTION –E

Q. 35. Ans :- 1900 ई0पू0 के लगभग हड़प्पा सभ्यता के पतन के लक्षण स्पष्ट दिखाई देने लगे थे । इस समय तक हड़प्पा सभ्यता के दो प्रमुख केन्द्र हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो नष्ट हो चुके थे। हड़प्पा सभ्यता की भौतिक संस्कृति में बदलाव आ गया था । शिल्पकला एवं लम्बी दूरी के व्यापार का भी अंत हो चुका था । भवन निर्माण कला भी अपने पतन की ओर अग्रसर थी । यह कहना कठिन है कि हड़प्पा सभ्यता का अंत कैसे हुआ । इस सम्बन्ध में विद्वानों में अब भी मतभेद बना हुआ है। यह सभ्यता 1200 ई0पू0 के लगभग लुप्त हो गई । इसे सभ्यता के पतन के प्रमुख कारण निम्नलिखित है। 1

1) **बाढ़ः–** एम0आर0 साहनी, जार्ज डेल्स तथा डा0 राईकस के अनुसार हड़प्पा सभ्यता के विनाश का कारण सिन्धु तथा इसकी सहायक नदियों में प्रतिवर्ष आने वाली बाढ़ थी। हड़प्पा सभ्यता के केन्द्र नदियों के किनारे बसे हुए थे । बाढ़ के प्रकोप से बचने के लिए हड़प्पा सभ्यता के निवासी अपने भवनों को धरातल से ऊँचा करते चले गए, परन्तु वह इसके प्रकोप से न बच सके । भू–विज्ञानिकों के सर्वेक्षण ने यह सिद्ध किया है कि मोहनजोदड़ो, चन्हुदड़ो, हडप्पा तथा लोथल नगरों का विनाश बाढ़ के कारण हुआ । 1

2) **भूकंप :–** कुछ विद्वानों की यह मान्यता है कि हड़प्पा सभ्यता का विनाश यहाँ आए विस्तृत पैमाने पर भूकंप के कारण हुआ । इस कारण अनेक नगरों का नामा निशान मिट गया । इस भूकंप के कारण अनेक नदियों के मार्ग भी बदल गए । इस कारण भी अनेक बस्तियाँ उजड़ गई । 1

3) **पर्यावरणीय असंतुलन :–** जॉन मार्शल तथा डा0 रौनाल्ड इत्यादि का तर्क है कि हड़प्पा सभ्यता का विनाश मुख्य तौर पर पर्यावरणीय असंतुलन के कारण हुआ । जलवायु परीर्वतन और वर्षा की कमी ने भूमि को बंजर बना दिया इससे अकाल पड़ने लगे जिस कारण हड़प्पा सभ्यता का विनाश हुआ । 1

4)**महामारी :–** कुछ विद्वानों के अनुसार हड़प्पा सभ्यता का विनाश किसी महामारी प्लेग अथवा मलेरिया के कारण हुआ । इस महामारी के कारण बड़ी संख्या में बड़ी संख्या में लोगो की मृत्यु हो गयी । जो लोग जीवित बचे उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा । इससे हड़प्पा सभ्यता के विकास को गहरा आघात लगा।

5) **आर्यो के आक्रमण :–** गार्डन चाइल्ड, सर आर0ई0एम0व्हीलर तथा स्टुआर्ट पिगट इत्यादि अनेक इतिहासकारों का यह मत है कि आर्यों के आक्रमणों के

कारण हड़प्पा सभ्यता का विनाश हुआ। ऋंगवेद में इस बात का प्रमाण मिलता है कि आर्य अपने प्रमुख देवता इंद्र से शत्रुओं के दुर्ग के नष्ट करने के लिए प्रार्थना करते थै । इंद्र द्वारा नष्ट किए गए अनेक दुर्गों के नाम भी मिलते है । इनमें से प्रमुख था हरियुविय ।विद्वनों ने इसकी पहचान हड़प्पा से की है । 1

Q. 36. Ans :- **महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का वर्णन :–**

महात्मा बुद्ध छठी शताब्दी ई0पू0 में भारत के महान धर्म प्रचारक थे। उनकी शिक्षाएं सरल एवं स्पष्ट थी। उनकी शिक्षाओं को "सुत्त पितक" में दी गई कहानियों के आधार पर पुननिर्मित किया गया है। उन्होंने अपनी शिक्षाओं का प्रचार लोगो की आम भाषा "पाली" में किया । उनकी शिक्षाओं ने लोगों के मनों पर जादुई प्रभाव डाला । उनकी प्रमुख शिक्षाएं निम्नलिखित है :– 1

1)**चार महान सत्य** – महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का आधार चार महान सत्य थे जो इस प्रकार है– (i) संसार दुःखों का घर है। (ii) इन दुःखों का कारण मनुष्य की इच्छाएं है । (iii) इच्छाओं के त्याग से मनुष्य के कष्ट दूर हो सकते है। (iv) इन इच्छाओं का अंत अष्ट मार्ग पर चलकर किया जा सकता है 1

2) **अष्ट मार्ग** – महात्मा बुद्ध ने लोगों को अष्ट मार्ग जिसे "अष्टांग मार्ग" भी कहा जाता है । क्योंकि यह कठोर तप तथा ऐश्वर्य के मध्य का मार्ग है। अष्ट मार्ग के सिद्धांत निम्नलिखित है ।

1. सत्य कर्म ।
2. सत्य विचार ।
3. सत्य विश्वास ।
4. सत्य रहन–सहन ।
5. सत्य वचन ।
6. सत्य प्रयत्न ।
7. सत्य ध्यान ।
8. सत्य समाधि । 1

3) **कर्म के सिद्धांत में विश्वास** –महात्मा बुद्ध कर्म सिद्धांत में विश्वास रखते थे । उनका विचार था कि मनुष्य स्वयं अपना भाग्य निर्माता है । जैसे कर्म मनुष्य करेगा, उसे वेसा की फल मिलेगा । इसलिए हमे अपने जीवन काल में सदैव अच्छे कर्म करने चाहिए ।

4)**अहिंसा** – महात्मा बुद्ध अहिंसा में विश्वास रखते थे । उनका विचार था कि मनुष्य को सभी जीवों अर्थात मनुष्य, पशु पक्षियों तथा जीव जंतुओं से प्रेम तथा सहानुभूति रखनी चाहिए । वह जीव हत्या तो दूर, उन्हे सताना भी बहुत पाप समझते थे । 1

5) **निवार्ण**– महात्मा बुद्ध के अनुसार मनुष्य का सबसे बड़ा उद्देश्य निर्वाण प्राप्त करना है । निर्वाण के कारण मनुष्य का सुख, आनंद और शांति की प्राप्ति हो जाती है । उसे आवागमन के चक्कर से सदा के लिए मुक्ति मिल जाती है ।इस प्रकार महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं ने अंधकार से भटक रही मानवता के लिए एक प्रकाश स्तम्भ का कार्य किया । 1

INDIA **PHYSICAL AND ADJACENT COUNTRIES** **भारत** **प्राकृतिक और पड़ोसी देश**

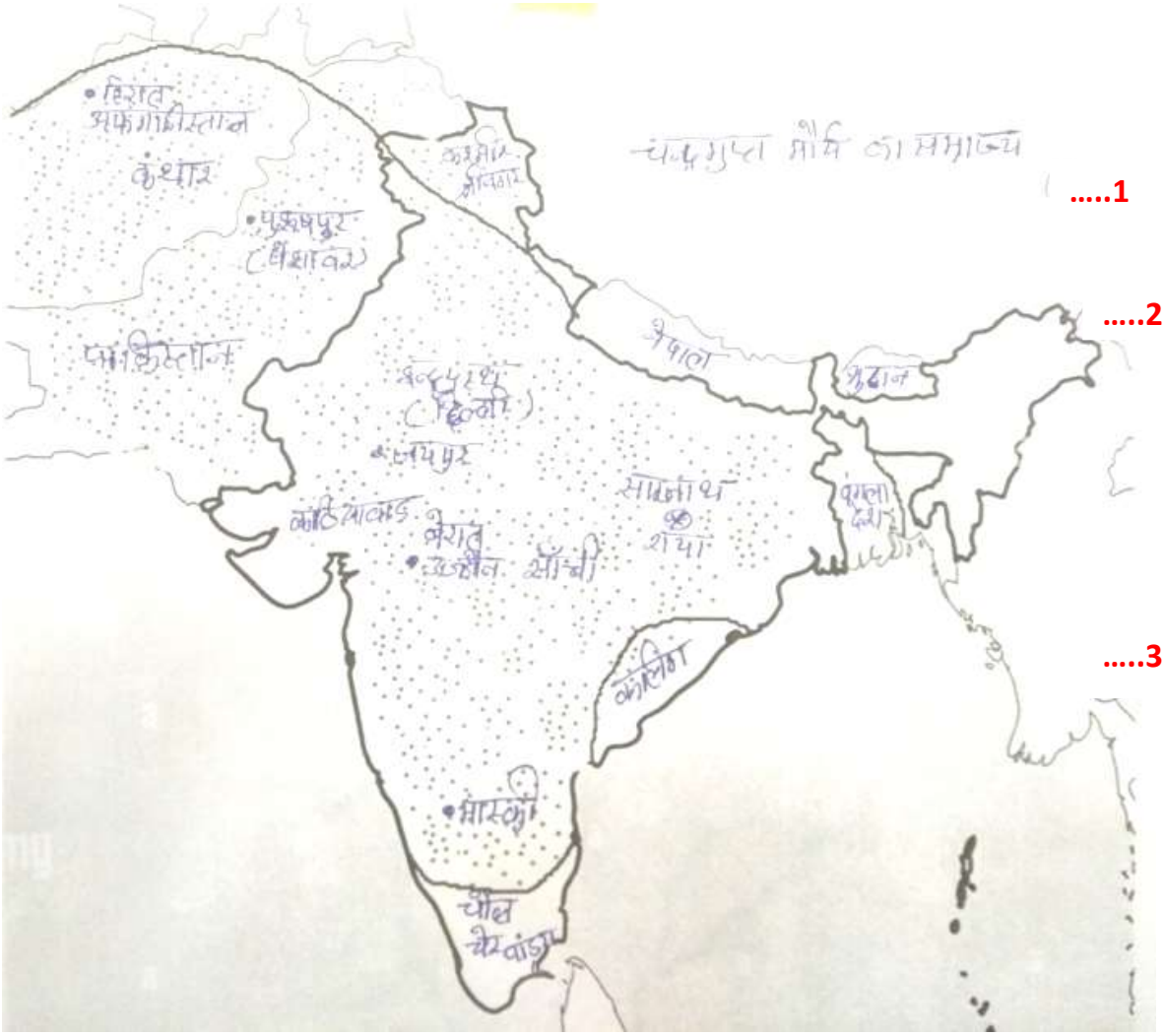

मानचित्र संकेत

चन्दगुप्त मौर्य का साम्राज्य (1)

राजधानी

प्रसिद्ध नगर